कलाम के शब्दों में भारत की आवाज़

▶ अरुण नैथानी

वर्ष 2020 में एक विकसित भारत का सपना देखने वाले पूर्व राष्ट्रपति व प्रख्यात वैज्ञानिक डा. अब्दुल कलाम की दिली इच्छा है कि गरीबीमुक्त भारत का निर्माण हो। उनका मानना है कि दस फीसदी की विकास-वृद्धि के साथ बुनियादी संरचना का विकास हो तथा महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भरता हासिल करे। आज़ाद का सपना है कि आज हर भारतीय के मन में वैसा ही राष्ट्रभक्ति का ज़ज्बा हिलोरे ले जैसा आज़ादी के आंदोलन के वक्त था। यानी वे निजी स्वार्थों का परित्याग करके राष्ट्रवाद की भावना को प्राथमिकता दें। लेकिन देश की राजनीतिक विद्रूपता, आर्थिक विषमता, सीमा पार का भय तथा अशांति फैलाने वाले कारक उन्हें राष्ट्र के मर्म पर चोट पहुंचाने वाले लगते हैं। राजपाल एंड सन्स द्वारा हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'भारत की आवाज़' भारत के विकास की चुनौतियों से उपजे सवालों का जवाब तलाशती नज़र आती है।

डा. कलाम देश के जिस भी भाग में जाते लोग खासकर विद्यार्थी उनसे 21वीं सदी के भारत से जुड़े तमाम मुद्दों पर सवाल पूछते हैं। कलाम उन सवालों की तर्कपूर्ण ढंग से व्याख्या करते हुए लोगों की जिज्ञासा शांत करते हैं। इस पुस्तक में ऐसे तमाम प्रासंगिक व रोचक सवालों के जवाब संकलित है जो उन्होंने विभिन्न अवसरों पर दिये। ये प्रश्न भारत की नयी पीढ़ी के सरोकारों, महत्वाकांक्षाओं तथा सपनों का अक्स प्रस्तुत करते हैं। उनके सटीक व तर्कपूर्ण जवाब एक विकसित भारत की राह दर्शाते हैं। डा. कलाम लाखों युवाओं के आदर्श हैं जो मेहनत और ईमानदारी से भारत को बुलंदियों की ओर ले जाने का सपना रखते हैं।

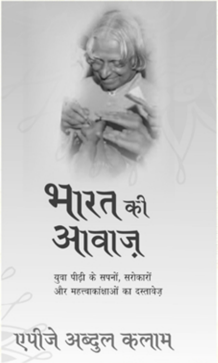

कलाम को एक बात खूब कचोटती है कि विगत कुछ वर्षों में लोगों में राष्ट्रीयता का भाव लुप्त होता जा रहा है। उनका मानना है कि अमेरिका, जापान व चीन की उन्नति में उग्र राष्ट्रीयता का भाव अहम कारक है। वे धर्मनिरपेक्षता को राष्ट्रीयता का आधार तथा हमारी सभ्यता का प्रबल पक्ष मानते हैं। इसके लिए नागरिकों के अनुशासित आचरण, जीवन-मूल्यों की पक्षधरता, जागरूकता, नैतिकता को राष्ट्रीय विकास की अनिवार्य शर्त मानते हैं। उनका स्पष्ट मानना है कि देश के 54 करोड़ युवा कुछ कर गुजरने की तमन्ना के साथ आगे बढ़ें तो देश की तकदीर बदल सकती है।

वे मानते हैं कि महान शक्ति के लिए महान दायित्व भी ज़रूरी है, इसके लिए नागरिकों में दायित्व बोध ज़रूरी है। वे दु:ख जताते हैं कि आज व्यक्तिवाद देश में राष्ट्रवाद को पराजित करता नज़र आता है जिसके चलते हमारे देश की प्रगति रुक-सी गई है। वे मानते हैं कि भ्रष्टाचार के मूल में आय की असमानता तथा किसी भी दूसरे की कीमत उसे प्राप्त करने का लोभ निहित है। उनका मानना है कि आतंकवाद सामाजिक ढांचे में अस्थिरता के कारण उत्पन्न होता है। युवाओं को रोजगार मिले व आर्थिक असंतुलन खत्म हो तो आतंकवाद खुद-ब-खुद खत्म हो जाएगा।

कलाम मानते हैं कि समतामूलक समाज की स्थापना तभी संभव है जब हमारे मन-मस्तिष्क भी सीमा रहित हों। उनकी स्पष्ट धारना है कि संकुचित मानसिकता मतभेदों को जन्म देती है, जबकि खुली सोच में नये दृष्टिकोण का विकास होता है। वे समय को अनमोल मानते हैं, इसके बेहतर नियोजन में सभी लक्ष्य हासिल किये जा सकते हैं। उनकी मान्यता है कि आप परिश्रम करेंगे तो भाग्य आपका साथ देगा।

युवाओं को सफलता का मंत्र बताते वे लिखते हैं कि वे लोग ही सबसे अधिक सफलता प्राप्त करते हैं जो दूसरों की राय की परवाह किये बिना अपनी रुचि का विषय तथा कार्य अपने लिए चुनते हैं। इसी तरह से तमाम जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए पुस्तक विकसित भारत के निर्माण की राह दिखाती है। युवाओं को यह पुस्तक ज़रूर पढ़नी चाहिए।

समीक्षित कृति : भारत की आवाज़, लेखक : एपीजे अब्दुल कलाम, प्रकाशक : राजपाल एंड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006, मूल्य : 195 रुपये, पृष्ठ : 180